



Parveen



Urvashi

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121741101

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
03/03/1999 :	जन्म तिथि	: 29/06/2000
बुधवार :	दिन	: गुरुवार
घंटे 18:24:00 :	जन्म समय	: 09:00:00 घंटे
घटी 28:29:45 :	जन्म समय(घटी)	: 08:12:12 घटी
India :	देश	: India
Bikaner :	स्थान	: Bikaner
28:01:00 उत्तर :	अक्षांश	: 28:01:00 उत्तर
73:22:00 पूर्व :	रेखांश	: 73:22:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:36:32 :	स्थानिक संस्कार	: -00:36:32 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
07:00:06 :	सूर्योदय	: 05:43:07
18:37:29 :	सूर्यास्त	: 19:36:47
23:50:34 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:51:35
सिंह :	लग्न	: कर्क
सूर्य :	लग्न लग्नाधिपति	: चन्द्र
कन्या :	राशि	: वृष
बुध :	राशि-स्वामी	: शुक्र
उ०फाल्गुनी :	नक्षत्र	: कृतिका
सूर्य :	नक्षत्र स्वामी	: सूर्य
2 :	चरण	: 3
शूल :	योग	: शूल
तैतिल :	करण	: तैतिल
टो-टोनी :	जन्म नामाक्षर	: उ-उपासना
मीन :	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	: कर्क
वैश्य :	वर्ण	: वैश्य
मानव :	वश्य	: चतुष्पाद
गौ :	योनि	: मेष
मनुष्य :	गण	: राक्षस
आद्य :	नाडी	: अन्त्य
श्वान :	वर्ग	: गरुड़

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी
सूर्य 3वर्ष 0मा 21दि
राहु

25/03/2019

24/03/2037

राहु	05/12/2021
गुरु	30/04/2024
शनि	07/03/2027
बुध	23/09/2029
केतु	12/10/2030
शुक्र	11/10/2033
सूर्य	05/09/2034
चन्द्र	06/03/2036
मंगल	24/03/2037

अंश

16:29:30
18:39:00
03:12:07
17:03:38
06:45:13
10:21:12
18:02:26
06:24:03
28:15:06
28:15:06
20:35:08
09:26:47
16:37:24

राशि

सिंह
कुंभ
कन्या
तुला
मीन
मीन
मीन
मेष
कर्क व
मक व
मक
मक
वृश्चि

ग्रह

लग्न
सूर्य
चंद्र
मंगल
बुध व
गुरु
शुक्र
शनि
राहु व
केतु व
हर्ष व
नेप व
प्लूटो व

राशि

कर्क
मिथु
वृष
मिथु
मिथु
वृष
मिथु
वृष
कर्क
मक
मक
मक
वृश्चि

अंश

25:20:32
13:50:20
06:27:07
14:34:08
24:53:09
05:53:42
18:41:50
02:35:04
00:49:21
00:49:21
26:29:46
12:03:37
16:58:24

विंशोत्तरी
सूर्य 1वर्ष 7मा 4दि
राहु

02/02/2019

02/02/2037

राहु	15/10/2021
गुरु	10/03/2024
शनि	15/01/2027
बुध	03/08/2029
केतु	22/08/2030
शुक्र	22/08/2033
सूर्य	16/07/2034
चन्द्र	15/01/2036
मंगल	02/02/2037

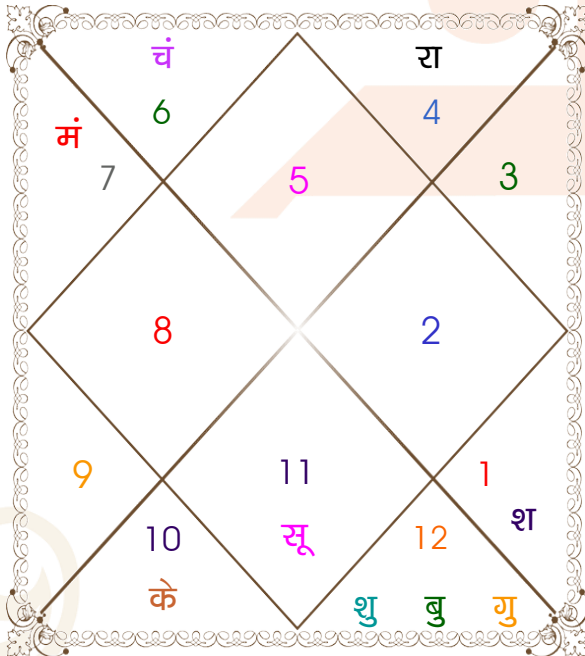
व - वकी स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

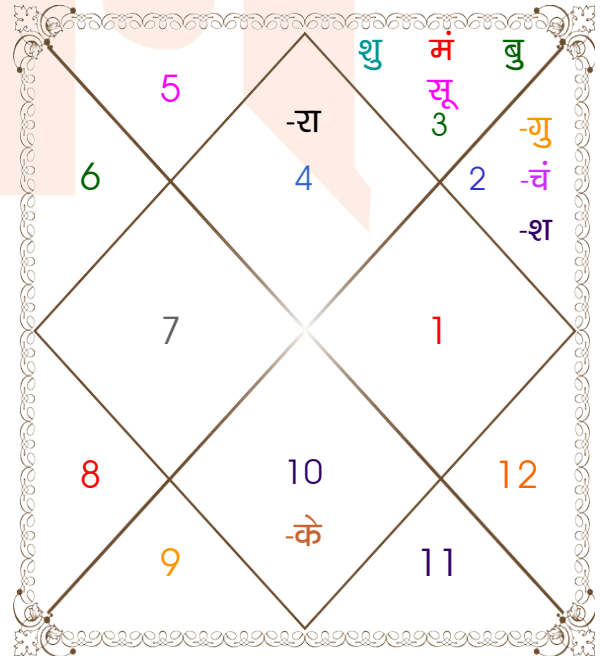
राहु : स्पष्ट

23:50:34 चित्रपक्षीय अयनांश 23:51:35

लग्न-चलित



लग्न-चलित



SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

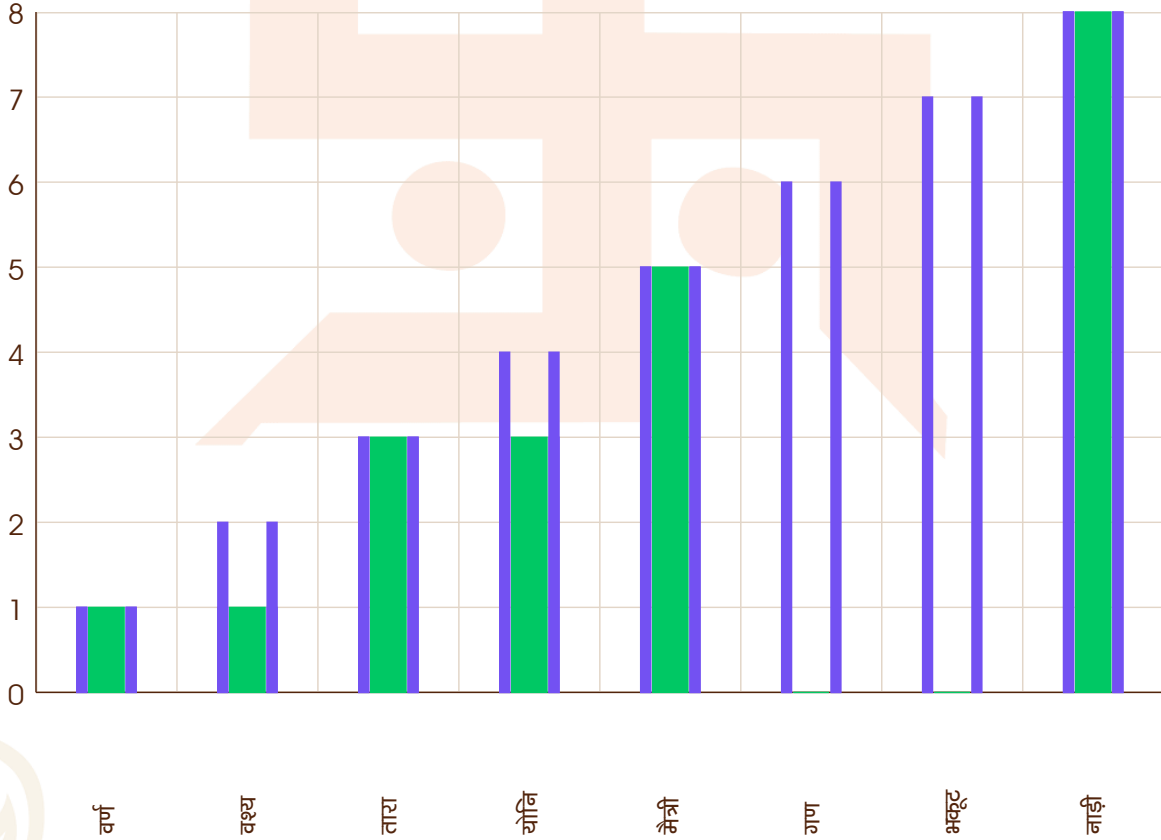
9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	गौ	मेष	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	कन्या	वृष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाडी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.00		

कुल : 21 / 36



अष्टकूट मिलान

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

चंतअममद का वर्ग श्वान है तथा Urvashi का वर्ग गरुड़ है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार चंतअममद और Urvashi का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

चंतअममद मंगलीक नहीं है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

Urvashi मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना ।

द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना ।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Urvashi कि कुण्डली में द्वादश भाव में मिथुन राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत् ।

तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत् ।।

यदि एक की कुण्डली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुण्डली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु चंतअममद कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहु त्रिषट् एकादशे शनिः ।

त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत् ।।

वर या कन्या की कुण्डली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुण्डली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल चंतअममद कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

चतुर्भुज तथा Urvashi में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम है।



अष्टकूट फलादेश

वर्ण

चंतअममद का वर्ण वैश्य है तथा Urvashi का वर्ण भी वैश्य है। इसमें दोनों का वर्ण समान है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इसके कारण चंतअममद और Urvashi दोनों की सोच भौतिकवादी सोच होगी तथा रूपये-पैसे को ज्यादा महत्व देंगे। चंतअममद और Urvashi दोनों मितव्ययी होंगे तथा भविष्य के लिए धन का संचय करना पसन्द करेंगे। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विचारों का सम्मान कर तथा आपस में विचार-विमर्श करके ही बुद्धिमत्तापूर्वक निवेश करेंगे।

वश्य

चंतअममद का वश्य द्विपद अर्थात् मनुष्य है एवं Urvashi का वश्य चतुष्पद अर्थात् पशु है अतः यह मिलान औसत मिलान होगा। यद्यपि कि जानवर एवं मनुष्य के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद अलग-अलग होते हैं फिर भी दोनों एक-दूसरे के सान्निध्य में जीवन व्यतीत करते हैं। फलस्वरूप चंतअममद एवं Urvashi दोनों प्रेम एवं सौहार्द के साथ एक-दूसरे के साथ जीवन व्यतीत कर सकेंगे। Urvashi अपने पति की हर आज्ञा शिरोधार्य करेगी तथा बदले में चंतअममद अपनी पत्नी की देखभाल करेगा तथा उसे प्रेम प्रदान करेगा।

तारा

चंतअममद की तारा जन्म तथा Urvashi की तारा भी जन्म है। अतः समान तारा होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों में अगाध प्रेम, सहयोग आपसी विश्वास तथा समझदारी की भावना बनी रहेगी। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विश्वास पात्र बने रहेंगे तथा पूर्ण सक्षमता से मिलकर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे। इनकी संतान बुद्धिमान, कर्तव्यपरायण तथा सफल होगी।

योनि

चंतअममद की योनि गौ है तथा Urvashi की योनि मेष है। अर्थात् दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में

सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में चंतअममद एवं Urvashi दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि चंतअममद एवं Urvashi के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण चंतअममद एवं Urvashi जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

चंतअममद का गण मनुष्य तथा Urvashi का गण राक्षस है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। अतः Urvashi का निर्दयी, निष्ठुर एवं कड़ा स्वभाव रहेगा जिसके कारण चंतअममद एवं उसके परिवार के सदस्यों का जीवन कष्टपूर्ण हो सकता है। साथ ही पति-पत्नी के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा बना रह सकता है। जिसके कारण तलाक एवं मुकदमे की संभावना भी बन सकती है।

भकूट

चंतअममद से Urvashi की राशि नवम भाव में स्थित है तथा Urvashi से चंतअममद की राशि पंचम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। जिसके कारण लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं अनहोनी घटनाएं घट सकती हैं। चंतअममद की प्रवृत्ति लॉटरी, सट्टेबाजी, जुआ आदि में धन बर्बाद करने की हो सकती है। अपनी इन बुरी आदतों के कारण पति-पत्नी के बीच कोई प्रेम शेष नहीं रह पाता। फिर भी यह विवाह स्वीकार्य है यदि दोनों के राशि स्वामी एक-दूसरे के मित्र हैं।

नाड़ी

चंतअममद की नाड़ी आद्य है तथा Urvashi की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात् दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात् यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान में शरीर के दो महत्वपूर्ण अवयवों वात एवं कफ का संतुलन होता है। चंतअममद की आद्य नाड़ी तथा Urvashi की अन्त्य नाड़ी अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ एवं मजबूत शरीर, दम्पति के आपसी प्रेम एवं समझदारी की द्योतक हैं। जिसके कारण आपकी संतान स्वस्थ, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

चंतअममद की जन्म राशि पृथ्वी तत्व युक्त कन्या तथा Urvashi की राशि भी पृथ्वी तत्व युक्त वृष है। पृथ्वी तत्व की परस्पर नैसर्गिक समता होने के कारण चंतअममद और Urvashi के स्वाभाविक गुणों में समानता होगी फलतः दाम्पत्य संबंधों में अनुकूलता रहेगी तथा इनका वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा। अतः मिलान शुभ रहेगा।

चंतअममद की जन्म राशि का स्वामी बुध तथा Urvashi की जन्म राशि का स्वामी शुक्र परस्पर मित्र है। अतः चंतअममद और Urvashi के मध्य मित्रता सहयोग एवं समर्पण का भाव रहेगा। चंतअममद और Urvashi एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा करेंगे तथा सच्चे मित्र की तरह कमियों की उपेक्षा करेंगे इससे इनका वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक रहेगा तथा एक दूसरे को उचित सम्मान प्रदान करेंगे।

चंतअममद और Urvashi की जन्म राशि परस्पर नवम एवं पंचम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से यदा कदा चंतअममद और Urvashi में अहंकार के भाव की उत्पत्ति होगी तथा इस प्रवृत्ति से एक दूसरे की उपेक्षा तथा आलोचना आदि करेंगे जिससे आपसी संबंधों में तनाव आदि उत्पन्न होगा परन्तु यदि चंतअममद और Urvashi सावधानी एवं धैर्य से कार्य करें तो तथा इन प्रवृत्तियों की उपेक्षा करें तो दाम्पत्य जीवन के सुख में वृद्धि होने की संभावना बन सकती है।

चंतअममद का वश्य मानव तथा Urvashi का वश्य चतुष्पद है। सामान्यतया मानव एवं चतुष्पद के मध्य असमानता तथा शत्रुता का भाव रहता है। अतः इसके प्रभाव से इनकी अभिरुचियों में विषमता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक आवश्यकताएं भी अलग अलग रहेंगी। साथ ही दाम्पत्य संबंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में कम ही सफलता प्राप्त करेंगे।

चंतअममद और Urvashi दोनों का वर्ण वैश्य है अतः इनकी कार्य क्षमताएं बराबर होंगी तथा दोनों की प्रवृत्ति धनार्जन में रहेगी तथा व्यापारिक बुद्धि से ये कार्यो को सम्पन्न करेंगे।

धन

चंतअममद और Urvashi दोनों जनम तारा में उत्पन्न हुए हैं। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही भकूट सम रहेगा। अतः आर्थिक स्थिति पर भकूट का शुभ या अशुभ कोई प्रभाव नहीं होगा। लेकिन Urvashi पर मंगल का अशुभ प्रभाव होगा जिससे यदा कदा वे हानि या व्यय का सामना कर सकती है परन्तु आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

चंतअममद और Urvashi दोनों को पैतृक धन या सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है

तथा धनऐश्वर्य की अभिवृद्धि करने में भी समर्थ होंगे। लेकिन मंगल के अशुभ प्रभाव से Urvashi अनावश्यक व्यय करने में तत्पर रहेंगी जिससे यदा कदा परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अतः Urvashi को चाहिए कि ऐसी प्रवृत्ति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करें।

स्वास्थ्य

चंद्रममद का जन्म आद्य तथा Urvashi का जन्म अन्त्य नाड़ी में हुआ है। अतः ये दोनों नाड़ी दोष से मुक्त माने जाएंगे लेकिन मंगल का चंद्रममद के स्वास्थ्य पर शुभ प्रभाव नहीं होगा। अतः इससे वे रक्त या पित संबंधी रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही गुप्त रोगों की भी संभावना होगी एवं संभोग शक्ति में कमी के कारण दाम्पत्य जीवन में कलह तथा अशांति रहेगी। अतः उपरोक्त अशुभ फलों में न्यूनता करने के लिए चंद्रममद को नियमित रूप से हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार का उपवास भी करना चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से चंद्रममद और Urvashi का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त चंद्रममद और Urvashi के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Urvashi के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Urvashi को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Urvashi को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुंदर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से चंद्रममद और Urvashi सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार चंद्रममद और Urvashi का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Urvashi के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबंध रहेंगे साथ ही अन्य जनों की अपेक्षा सास से संबंधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद Urvashi अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामंजस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं सामंजस्यता का भाव भविष्य में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृत्ति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबध अनुकूल रहेंगे तथा उनकी ओर से Urvashi पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि Urvashi अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबधों में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल-श्री

चंतअममद के अपनी सास से मधुर संबध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को चंतअममद अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी चंतअममद के संबधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण चंतअममद के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।